UGC APPROVED JOURNAL - 47746
© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 01 | January – March 2018

मोहनजोदड़ो सिंधी पर एक विवेचना

Sumit Kumar Singh, Assistant Teacher

Upgraded Middle School Kunwar ,Rajnagar Madhubani Bihar

सार

मोहनजोदड़ो सिंधी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है 'मुर्दों का टीला। इसे 'मुअन जो दड़ो' भी कहा जाता है। चार्ल्स मैसन ने सर्वप्रथम हड़प्पा के विशाल टीलों की ओर ध्यान आकृष्ट किया था। मोहनजोदाड़ो सिंधु घाटी सभ्यता का एक नगर है जो विशालकाय टीलों से पटा हुआ है। यह नगर सिंधु घाटी के प्रमुख नगर हड़प्पा के अंतरगत आता है। सिंधु नदी के किनारे के दो स्थानों हड़प्पा और मोहनजोदड़ो (पाकिस्तान) में की गई खुदाई में सबसे प्राचीन और पूरी तरह विकसित नगर और सभ्यता के अवशेष मिले। सर जॉन मार्शल ने सिन्धु घाटी सभ्यता को 'हड़प्पा सभ्यता' का नाम दिया था जिसे आद्य ऐतिहासिक युग का माना गया। इस सभ्यता की समकालीन सभ्यता मेसोपोटामिया थी।

मुख्य शब्द : घाटी, सभ्यता, प्राचीन, ऐतिहासिक इत्यादि।

प्रस्तावना

किनारे के दो स्थानों हड़प्पा और मोहनजोदड़ो (पाकिस्तान) में की गई खुदाई में सबसे प्राचीन और पूरी तरह विकसित नगर और सभ्यता के अवशेष मिले। सर जॉन मार्शल ने सिन्धु घाटी सभ्यता को 'हड़प्पा सभ्यता' का नाम दिया था जिसे आद्य ऐतिहासिक युग का माना गया। इस सभ्यता की समकालीन सभ्यता मेसोपोटामिया थी।मोहनजोदड़ो सभ्यता का विकास लगभग 2600 ईसा पूर्व में हुआ था। ऐसा माना जाता है कि मोहनजोदड़ो प्राचीन मिस्र, मेसोपोटामिया और क्रेते की समकालीन सभ्यता का एक अहम अंग था। यह अन्य शहरों के साथ संचार का प्राथमिक साधन था। इस करण यहां अन्य शहरों से लोग आसानी से आते-जाते थे। यह शहर कृषि क्षेत्र में अधिक प्रचलित था। सिंधु घाटी सभ्यता के पास रहने वाले निवासियों के लिए यह शहर बहुत ही महत्वपूर्ण था। इतिहासकारों के मुताबिक इस शहर में खेती से उपजे सामानों को रखने का प्रायोजित स्थान था। सामानों को पानी से बचाने का भी पूरा प्रबंध था। यहां बने घरों में पक्की ईंटों से बने स्नानघर और शौचालय भी मौजूद थे। मोहनजोदड़ो में पानी के निकले के लिए बनी नालियों और स्नानघरों को देखकर ऐसा लगता है कि उस समय के वंशज वास्तुकला में माहिर थे। विशेषज्ञों की राय में मोहनजोदड़ो बाकी शहरों की तुलना में बेहतर था।

मोहनजोदड़ो की विशेषता -

- खोज के दौरान पता चला कि यहां के लोग गणित का भी ज्ञान रखते थे। उन लोगों को जोड़ना, घटाना, मापना सब कुछ आता था। जो ईट अलग अलग शहर में इस्तेमाल होती थी वह सभी एक ही वजन और एक ही साइज की थी।
- पुरातत्ववेत्ताओं (Archaeologists) के अनुसार सिंधु घाटी सभ्यता के लोग गाने-बजाने, खेलने-कूदने के भी बहुत शौकीन थे। उन्होंने मोहनजोदड़ो की खुदाई के दौरान म्यूजिक इंस्ट्रूमेंट और खिलौनों को भी खोज निकाला था। इतना ही नहीं वह लोग साफ-सफाई पर भी काफी ज्यादा ध्यान देते थे। पुरातत्ववेत्ताओं को साबुन, कंघी, दवाइयां भी मिली थी।

- उन्होंने कंकालों के दांतों का निरीक्षण किया तो उसके परिणाम काफी हैरान करने वाले थे। आपको जानकर हैरानी होगी कि उस समय के लोग भी आज की तरह नकली दांत का इस्तेमाल किया करते थे। मतलब यह हुआ कि प्राचीन सभ्यता में भी डॉक्टर हुआ करते थे। खोज के दौरान खोजकर्ताओं को धातु के गहने और कॉटन के कपड़े में मिले थे यह गहने और कपड़े आज भी म्यूजियम में है।
- स्विमिंग पूल मोहनजोदड़ो के आकर्षण में से एक था। ग्रेट बाथ (महास्नान) शहर के केंद्र में स्थित था। यह स्नानघर एक विशाल क्षेत्र में फैला हुआ था। ऐसा माना जाता है कि यहाँ लोग अपने शुद्धिकरण के लिए जाते थे। स्विमिंग में जाने के लिए सीढ़ियां तक बनी हुई थी।

कला -

कई शोधकर्ताओं ने यह तर्क दिया है कि मोहनजोदड़ो के निवासी कला और संस्कृति में काफी आधुनिक थे। मोहनजोदड़ो अपनी कला के लिए काफी लोकप्रिय था। मोहनजोदड़ो के समय में टेराकोटा से बने विभिन्न कलात्मक पैटर्न भी पाए गए हैं।

वहां के लोग आभूषण के उपयोग के लिए प्रचलित थे। हार, झुमके, अंगूठी, कंगन जैसे आभूषण का इस्तेमाल महिलाएं करती थी।

इतना ही नहीं बल्कि मोहनजोदड़ो के निवासी नाच-गाने में भी काफी मशहूर थे। इन सब चीजों के साथ-साथ वह साफ सफाई का भी ध्यान रखते थे। इस शहर के निवासी, साफ सफाई का विशेष ख़याल रखते थे जो सही मायने में उनकी बुद्धि को दर्शाता है। विशेषज्ञों की माने तो मोहनजोदड़ो काफी समृद्ध क्षेत्र था जहां हाथी के दांत, पत्थर की विभिन्न प्रकार की मूर्तियाँ मौजूद थीं।

ऐसा माना जाता है कि दुनिया में पहली नाली(नाले) का निर्माण यही अर्थात मोहनजोदड़ो से ही शुरू हुआ था। इतिहासकारों के अनुसार यहां के लोग खेती भी किया करते थे। उन्हें गेहूं, चावल उगाना अच्छी तरह से आता था। इतना ही नहीं वह लोग जानवर का भी पालन किया करते थे। भारतीय द्वारा मोहनजोदड़ो का खोज सन 1922 ईस्वी में 'राखल दास बनर्जी' जो पुरातत्व विभाग के संरक्षक थे, पाकिस्तान में सिंधु नदी के किनारे खुदाई का काम किया था। उन्हें वहां बुद्ध का स्तूप सर्वप्रथम दिखाई दिया उसके बाद उन्होंने आशंका जताई कि इस जगह जरूर कोई बहुत बड़ा इतिहास दफन है।

इस खोज को बढ़ाते हुए सन 1924 ईस्वी में 'काशीनाथ नारायण' और सन 1925 ईस्वी में 'जॉन मार्शल' ने खुदाई का काम करवाया था। सन 1985 ईस्वी तक इसे भारत के अलग-अलग लोगों के द्वारा मोहनजोदड़ो की खुदाई का काम करवाया गया। लेकिन इसके बाद इस खोज को बंद करना पड़ा इसका कारण यह बताया गया कि खुदाई के वजह से प्रकृति को नुकसान हो रहा है।

खुदाई के दौरान कुछ लिपि भी मिले हैं जिससे यह सिद्ध होता है कि उस समय के लोगों को पढ़ना लिखना भी आता था। कहते हैं कि प्राचीन सभ्यता में 50 लाख लोग रहते थे जो एक भूकंप में पूरी तरह नष्ट हो गए थे। पुरातत्ववेत्ता और इतिहासकार मोहनजोदड़ो की आज भी और खोज करने में लगे हुए हैं। वह पता कर रहे हैं कि कैसे उस शहर का निर्माण हुआ? वहां रहने वाले ने कैसे इतनी बड़ी सभ्यता का विकास किया? और आखिर इनका अंत कैसे हो गया? इन सभी सवालों के जवाब के लिए पुरातत्ववेत्ताओं की खोज आज भी जारी है।

हिन्दू धर्म का मोहनजोदोड़ो से संबंध :

हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो में असंख्य देवियों की मूर्तियां प्राप्त हुई हैं। ये मूर्तियां मातृदेवी या प्रकृति देवी की हैं। प्राचीनकाल से ही मातृ या प्रकृति की पूजा भारतीय करते रहे हैं और आधुनिक काल में भी कर रहे हैं। यहां हुई खुदाई से पता चला है कि हिन्दू धर्म की प्राचीनकाल में कैसी स्थिति थी। सिन्धु घाटी की सभ्यता को दुनिया की सबसे रहस्यमयी सभ्यता माना जाता है, क्योंकि इसके पतन के कारणों का अभी तक खुलासा नहीं हुआ है।

चार्ल्स मेसन ने वर्ष 1842 में पहली बार हड़प्पा सभ्यता को खोजा था। इसके बाद दया राम साहनी ने 1921 में हड़प्पा की आधिकारिक खोज की थी तथा इसमें एक अन्य पुरातत्वविद माधो सरूप वत्स ने उनका सहयोग किया था। इस दौरान हड़प्पा से कई ऐसी ही चीजें मिली हैं, जिन्हें हिन्दू धर्म से जोड़ा जा सकता है। पुरोहित की एक मूर्ति, बैल, नंदी, मातृदेवी, बैलगाड़ी और शिवलिंग। 1940 में खुदाई के दौरान पुरातात्विक विभाग के एमएस वत्स को एक शिव लिंग मिला जो लगभग 5000 पुराना है। शिवजी को पशुपतिनाथ भी कहते हैं। मोहनजोदेड़ों सभ्यता के नष्ट होने का पहला कारण : ऐसा प्रतीत होता है कि पृथ्वी की संरचना आंतरिकी में हुए बदलाव, भूकंप और जलवायु परिर्वत के चलते जहां सरस्वती भूमिगत हो गई वहीं सिंधु नदी ने अपना मार्ग बदल दिया। पहले सिंधु हिमालय से निकलकर कच्छ की खाड़ी में गिरती थी अब इसका रुख बदलकर अन्य हो गया।

लगभग इसी काल में एक वैश्विक सूखा पड़ा जिसके कारण संसार की सभ्यताएं प्रभावित हुईं और इसका दक्षिण योरप से लेकर भारत तक पर असर हुआ। करीब 2200 ईसा पूर्व में मेसोपोटेमिया की सुमेरियाई सभ्यता पूरी तरह खत्म हो गई। उस समय मिस्र में पुराना साम्राज्य इस जलवायु परिवर्तन के कारण समाप्त हो गया। श्रीमद्भागवत में एक स्थान पर कहा गया है कि श्रीकृष्णजी के भाई बलराम के कारण यमुना ने अपना रास्ता बदल दिया था, जो कि उस समय सरस्वती की एक प्रमुख उपधारा थी।

पर भूकम्पों जैसे बड़े भौगोलिक परिवर्तनों के चलते नदी की दोनों ही बड़ी धाराएं समाप्त हो गईं। इसका एक परिवर्तन यह भी हुआ कि राजस्थान का बहुत बड़ा इलाका बंजर हो गया। अगर आप भारतीय उपमहाद्वीप के नक्शे पर सरस्वती नदी के रास्ते का निर्धारण करना चाहें तो आप समझ सकते हैं कि यह सिंधु नदी के रास्ते पर करीब रही होगी। पुरातत्वविदों का कहना है कि तब भारतीय उपमहाद्वीप में जो सबसे पुरानी सभ्यता थी, उसे केवल सिंधु घाटी की सभ्यता कहना उचित न होगा, क्योंकि यह सिंधु और सरस्वती दोनों के किनारों पर पनपी थीं। डैनिनो जैसे शोधकर्ताओं की खोजों ने इस बात को सत्य सिद्ध किया है।

जलवायु परिवर्तन ने करीब 4 हजार साल पहले सिन्धु घाटी या हड़प्पा सभ्यता का खात्मा करने में एक बड़ी भूमिका निभाई थी। यह दावा एक नए अध्ययन में किया गया है। नॉर्थ कैरोलिना स्थित एप्पलचियान स्टेट यूनिवर्सिटी में नृविज्ञान (एन्थ्रोपोलॉजी) की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. ग्वेन रॉबिन्स शुग ने एक बयान में कहा कि जलवायु, आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों, सभी ने शहरीकरण और सभ्यता के खात्मे की प्रक्रिया में भूमिका निभाई, लेकिन इस बारे में बहुत कम ही जानकारी है कि इन बदलावों ने मानव आबादी को किस तरह प्रभावित किया।

उपसंहार

मोहनजोदड़ो नगर में रहने वाले लोगों ने पूरी प्लानिंग के साथ मोहनजोदड़ो नगर को बसाया था। खुदाई में मिले साक्ष्यों के आधार पर ऐसा कहा जा सकता है कि यह लोग मकान बनाने की कला में माहिर थे। मोहनजोदड़ो कि खुदाई में तीन तीन मंजिल के बने हुए मकान मिले हैं। घरों के अंदर शौचालय और पानी निकासी के लिए घरों से बाहर आती नालियां भी मिली हैं। कहा जाता है दुनिया में पहली नाली का निर्माण यहीं से हुआ था। मोहनजोदड़ो वासी काफी बड़े स्नानघर बनाया करते थे। इन घरों की लंबाई 39 फीट चौड़ाई 23 फीट और गहराई 8 फीट थी। यह लोग अपने अन्य का भंडारण करने के लिए विशाल अन्नागार बनाते थे। पुरातात्विक खोज के अनुसार इन लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती था। यह लोग गेहूं, चावल, कपास, जो, के बारे में भली-भांति जानते थे। पुरातात्विक खोज के अनुसार यह लोग खेलने-कूदने के काफी शौकीन थे इन लोगों को शतरंज भी खेलना आता था।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

[1] आदि पुराण: हिन्दी अनुवाद, पन्नालाल जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, 1993

[2] आपस्तम्ब गृह्यसूत्र: चैखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 1971

[3] आपस्तम्ब श्रौतसूत्र: चित्रस्वामी ओरियण्टल इन्स्टीट्यूट, बड़ौदा, 1955

[4] आश्वलायन गृह्यसूत्र: म.म. गणपति शास्त्री द्वारा सम्पादित, अड्यार, मद्रास, 1971

[5] ईशानशिवगुरुदेवपद्धति: सम्पा. महामहोपाध्याय गणपति शास्त्री, भाग 1-4, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली, वाराणसी, 1990 (पुनर्मुद्रण)

[6] ऋग्वेद: श्री पण्डित जयदेव शर्मा, अजमेर, 1959 दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली, 1976 सुबोध भाष्य, दामोदर सातलवेकर, स्वाध्याय मण्डल पारडी (सूरत), 1958

[7] अंगविज्जा: पुण्यविजयजी द्वारा प्रकाशित, प्राकृत् टेक्स्ट सोसाइटी, बनारस, 1957

[8] अंगुरनिकाय: सं. भिक्षु जगदीश, कश्यप, नालन्दा देवनगरी-पालि सीरिज